

औरम्

प्यारा ऋषि

महर्षि दयानन्द सरस्वती

“मैं तो दुनियां
को मुक्त कराने
आया हूँ, कैद
कराने नहीं!”



महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के जीवन की
प्रेरणाप्रद घटनाओं पर आधारित चित्रकथाएँ

जीवन को सफल बनाने के 10 स्वर्णिम सूत्र

जन्म से ही कोई महान् नहीं बनता; और पैदा होने मात्र से कोई सफल नहीं होता। अपितु अपने श्रेष्ठ गुण, कर्मों से ही कोई मनुष्य महान् बन पाता है और अपने जीवन को सफल बना लेता है। शास्त्रों के अनुसार ऐसे 10 दिव्य गुण 'स्वर्णिम सूत्रों' के रूप में यहाँ बताये जा रहे हैं।

1. **धृति**— धैर्य रखना। कठिन परिस्थितियों में भी विचलित न होना, स्थिर रहना।
2. **क्षमा**— क्षमा करना। मन में बदले की भावना न रखना।
3. **दम**— मन का नियन्त्रण। मन का गुलाम न बन कर मन को अपने वश में रखना।
4. **अस्तेय**— चोरी न करना। मन से, वाणी से और कर्म से कभी चोरी न करना।
5. **शौचम्**— पवित्रता। जल आदि से शरीर की पवित्रता और साधना से मन आदि की पवित्रता।
6. **इन्द्रिय निग्रह**— दसों इन्द्रियों का नियन्त्रण। विचार पूर्वक दसों इन्द्रियों को अपने वश में रखना।
7. **धी**— बुद्धि। सात्विक आचार-विचार से बुद्धि का विकास करना और उसका केवल सदुपयोग ही करना।
8. **विद्या**— यथार्थ ज्ञान, सत्यविद्या को प्राप्त करना और उसका विस्तार करना।
9. **सत्य**— सत्य आचरण। सदा सत्य का ग्रहण करना और असत्य को त्यागना।
10. **अक्रोध**— क्रोध न करना। भावनाओं पर नियन्त्रण पाकर क्रोध न करना। सदा शान्त रहना।

ये हैं वे स्वर्णिम सूत्र (धर्म के 10 लक्षण) जिनके द्वारा मनुष्य महान् और सफल बनता है। इस कॉमिक्स में वर्णित सभी महान् पुरुषों में पग-पग पर आप इन स्वर्णिम गुणों को पायेंगे।

इन महापुरुषों के जीवन से प्रेरणा लेकर, इनके अनुकरण से हम भी महान् और सफल बन सकते हैं। और इनके समान राष्ट्र व समाज की सेवा कर सकते हैं।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी संसार में एक ऐसे विलक्षण महापुरुष हुए हैं जिनके जीवन का पल-पल प्रेरणा दायक है। उन्होंने अपना जीवन संसार के उपकार के लिए अर्पित कर दिया था— उनके जीवन की अनेक ऐसी घटनाएँ हैं, जो व्यक्ति को जीवन-निर्माण की सतत् प्रेरणा देती हैं। अतएव बच्चों, आप इन्हें पढ़कर-इन्हें जानकर अपने जीवन में उन्नति के मार्ग पर चलकर देश के सच्चे नागरिक बन सकें, इसी भावना के साथ इस कॉमिक्स को प्रकाशित किया जा रहा है। आप पहले अपने आप पढ़ें तथा फिर अपने मित्रों को भी अवश्य पढ़ाएं।

(प्यारा ऋषि)

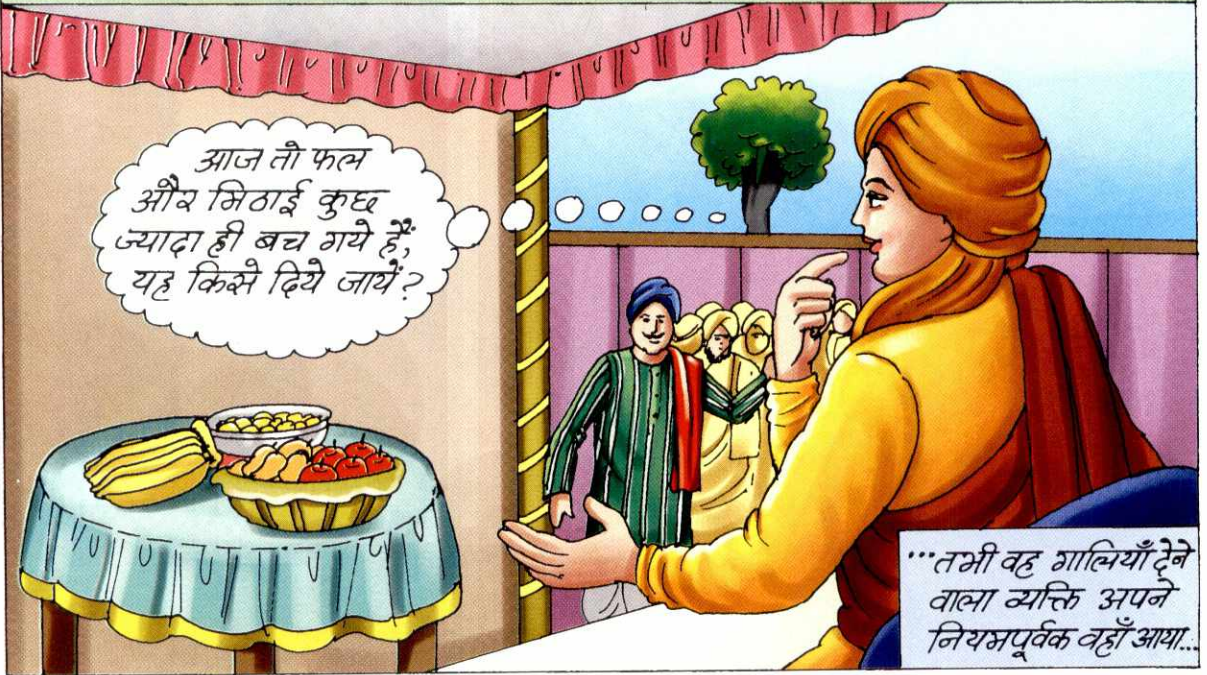
गाली देने वाले पर दया

एक बार स्वामीजी कानपुर में प्रवचन कर रहे थे और श्रद्धालु भक्तगण श्रद्धापूर्वक सुन रहे थे। उनमें एक व्यक्ति ऐसा भी था जो नियमपूर्वक स्वामीजी के प्रवचन स्थल पर पहुँच कर गालियाँ दिया करता था।



स्वामीजी उस व्यक्ति की बातों पर कोई ध्यान न देकर सुना-अनसुना कर दिया करते थे।

श्रद्धालु भक्तगण स्वामीजी के लिए फल-मिठाई ले आया करते थे। और वह उसे लोगों में बांट दिया करते थे। एक दिन ऐसा हुआ कि फल तथा मिठाई अधिक मात्रा में होने से लोगों के बाँटने के बाद भी बच गये। स्वामीजी सोच रहे थे—



...स्वामीजी ने उसे बुलाकर सब पदार्थ उसे दे दिये, और कहा कि—



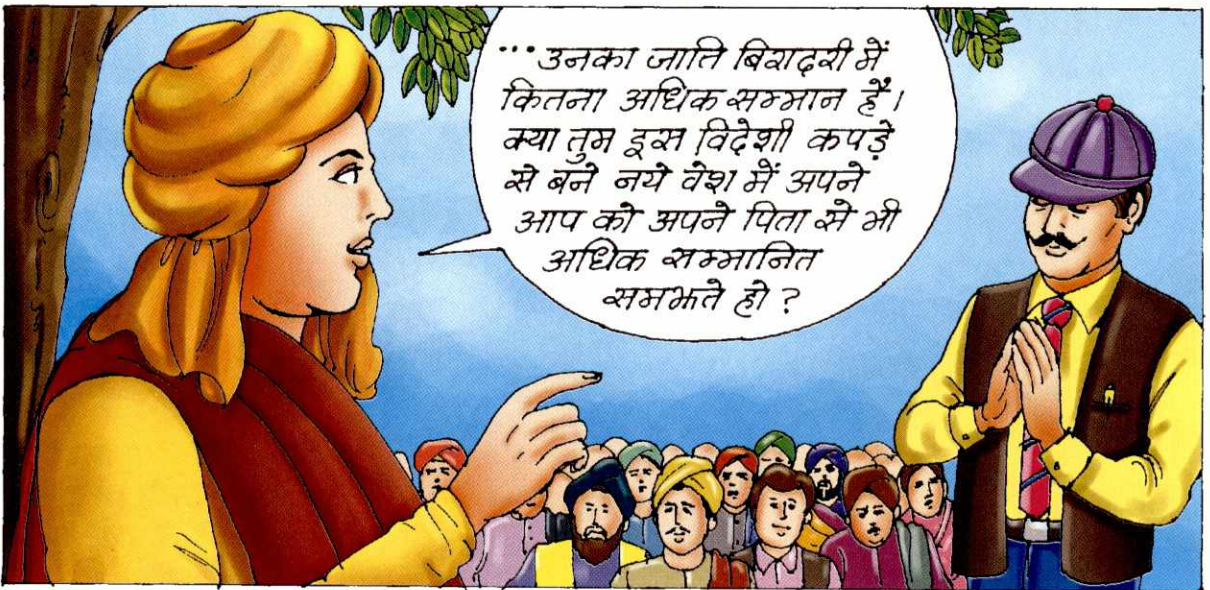
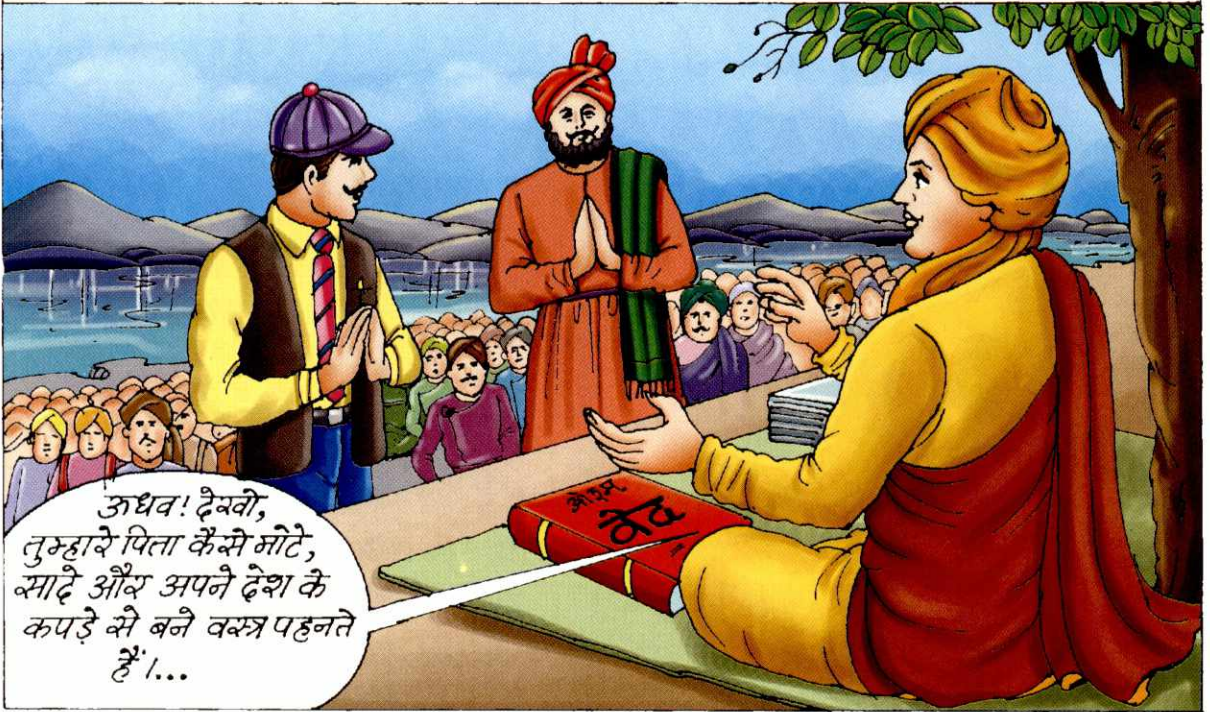
एक दिन उसकी आत्मा ने उसे धिक्काश। वह स्वामीजी के चरणों में गिर कर कहने लगा—

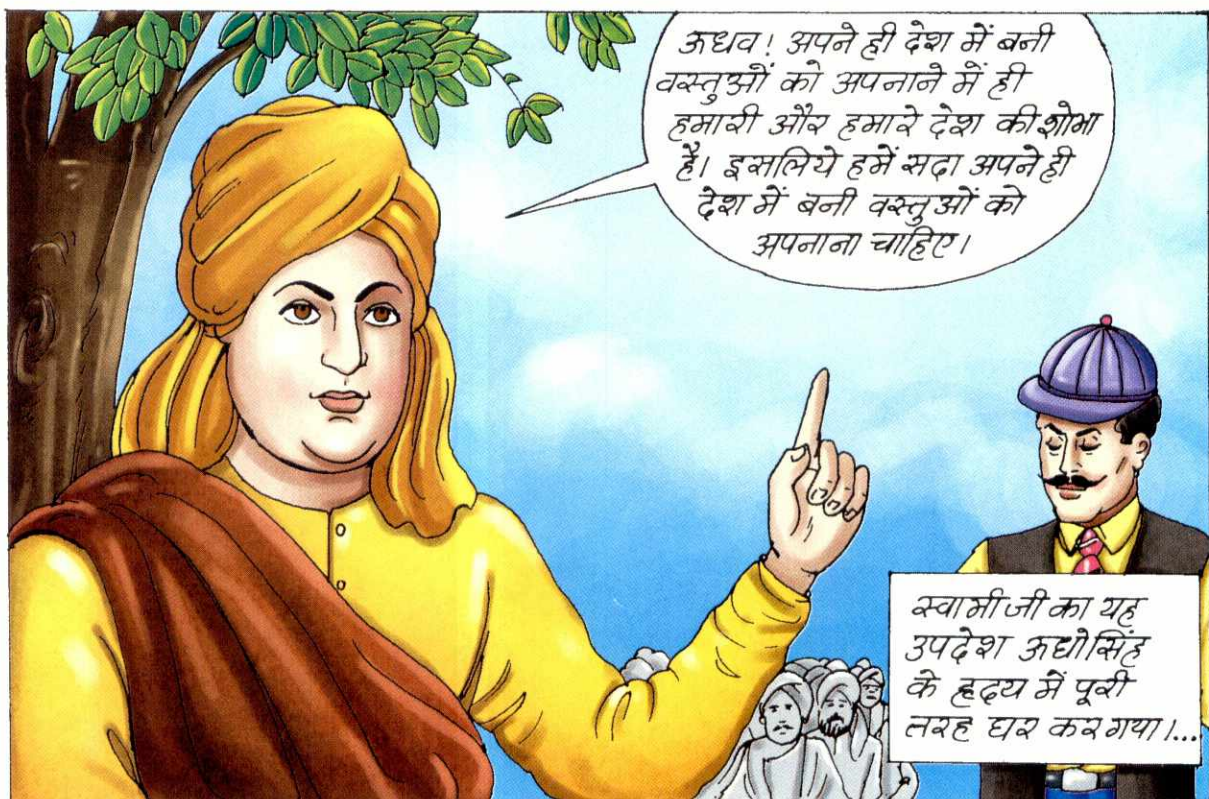


बच्चों ! क्षमा करना एक महान् गुण है। इसलिए जीवन में क्षमा करना सीखो और महान् बनो।

स्वदेशी ही वस्तु अपनाने में शोभा

एक बार स्वामीजी अलीगढ़ में प्रवचन दे रहे थे। तभी 'ठाकुर ऊधोसिंह' छावली निवासी अपने पिता ठाकुर भूपाल सिंह के साथ स्वामीजी के दर्शन करने आये। उस दिन ऊधोसिंह के वस्त्र नये ढंग के थे और सबके सब विलायती कपड़ों के बने थे। यह देख स्वामीजी बोले—





... और घर पहुँचते ही उन्होंने विदेशी वस्त्रों को उतार फेंका और स्वदेशी वस्त्र धारण कर लिए।



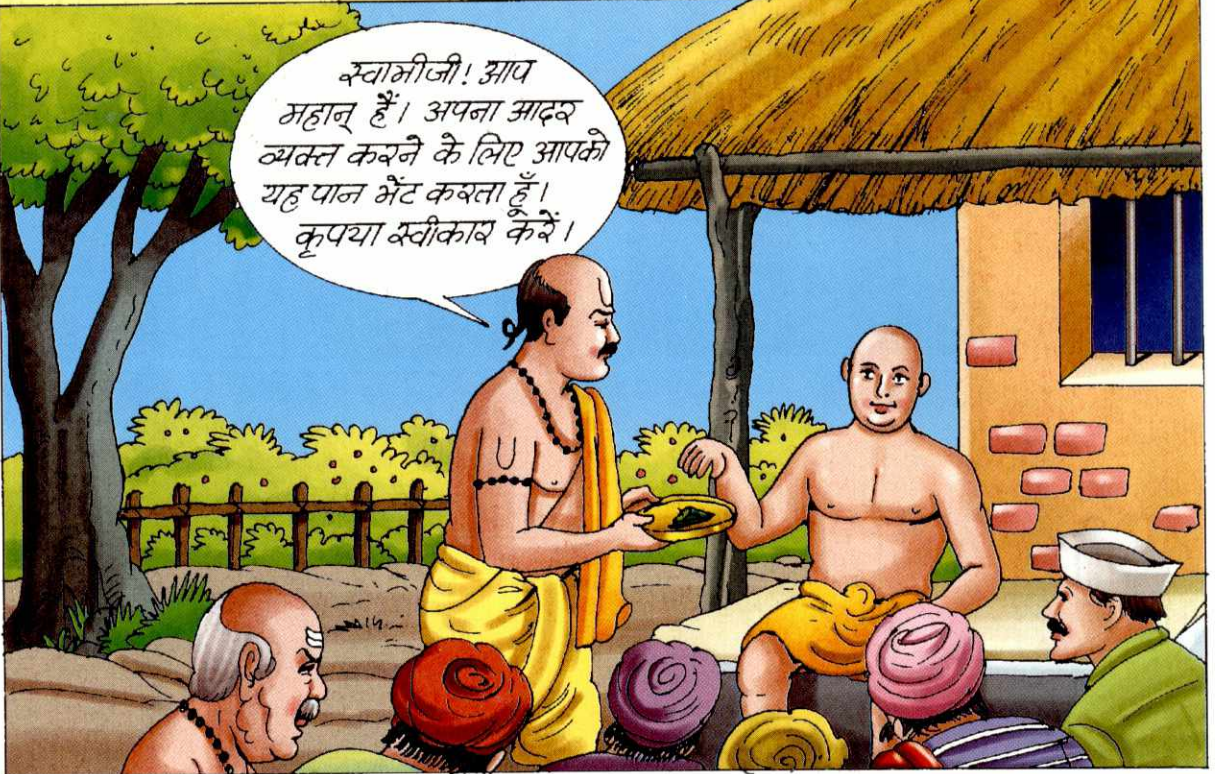
स्वदेशी की प्रबल भावना के बिना हम अपने देश को सबल नहीं बना सकते। मनुष्य की शोभा स्वदेशी भावना और उत्तम सदाचार से होती है।

जहर देने वाले की कैद से मुक्ति

स्वामीजी सभी वर्ग के लोगों के बीच समान रूप से उठते-बैठते थे। इसमें पंडित व समाज के अन्य लोग स्वामी दयानन्द सरस्वतीजी से बेहद क्रीदित थे।

एक दिन एक पंडित ने स्वामीजी को पान देते हुए कहा—

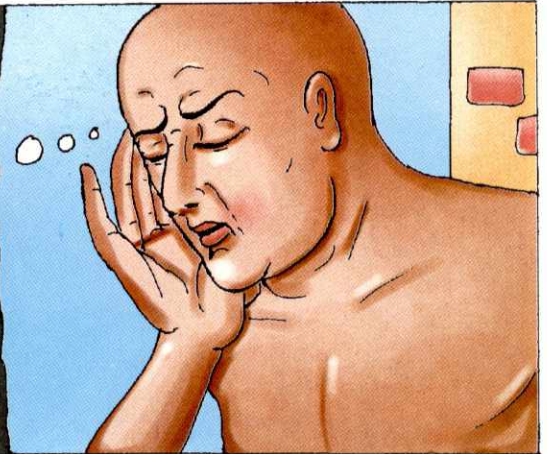
स्वामीजी! आप महान् हैं। अपना आदर व्यक्त करने के लिए आपको यह पान भेंट कर रहा हूँ। कृपया स्वीकार करें।



पान श्वानों के थोड़ी देर बाद—

हे भगवान् !
लगता है, इस पान
में जहर था।

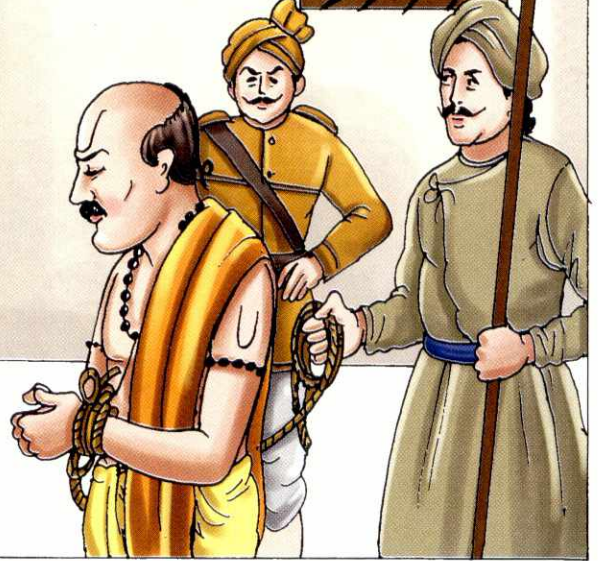
फिर स्वामीजी ने यौगिक क्रियाओं के द्वारा पेट का समस्त भोजन वमन कर दिया और अपने आप की जहर के प्रभाव से बचा लिया।



स्वामीजी की हत्या के इशारे से पान में जहर देने वाले अपराधी को शहर के तहसीलदार सय्यद मोह-
म्मद ने जो स्वामीजी के भक्त बन गये थे कैद कर लिया।

अरे, बेशर्म! स्वामीजी
जैसे महापुरुष को तुने
धोखे से जहर दिया,
जो आज तुम्हारे हिन्दु
धर्म के सबसे बड़े
रक्षक हैं।

इसे, स्वामीजी
के पास ले
चलो।



जहर देने वाले अपराधी को जब स्वामीजी के सामने लाया गया—

तहसीलदार सय्यद साहब! इसे
छोड़ दें। मैं तो लोगों की मुक्त कशने
आया हूँ फिर इसे बंधन में कैसे
डलवा दूँ?

वाह! स्वामीजी,
जैसा आपका नाम है,
वैसे ही आपके गुण हैं। आप
दया के सागर हैं



बच्चों ! महर्षि की महानता देखो कि विष देने वालों से भी बदले की भावना नहीं रखते। हमें भी किसी से बदले
की भावना नहीं रखनी चाहिए।

उपासना धर्म का निरादर

एक दिन स्वामीजी आर्य समाज के माताहिक
सत्संग में पहुँचें, उस समय उपासना हो रही थी।
स्वामीजी को आता देखकर...



उपासना की समाप्ति पर स्वामीजी ने उपदेश दिया कि—



... उपासकों को खड़ा नहीं होना चाहिये। क्यों कि परमेश्वर से बड़ा कोई नहीं है। ऐसा करने से उपासना धर्म का निरादर होला है।

ओ३म्
आर्य समाज सत्सङ्ग सभा
(साहौर)

महर्षि की इस बात को सबने स्वीकार किया और उनकी इस महानता से सब बहुत प्रभावित हुए।

भगवान् की भक्ति सर्वोपरि है। इसलिए भक्ति, उपासना करते समय समाज के किसी शिष्टाचार से प्रभावित नहीं होना चाहिए।

तब तो रीछ बड़ा त्यागी है

एक दिन बम्बई में स्वामीजी क्षौर
करा रहे थे। एक सज्जन ने वहाँ
आकर स्वामीजी से सवाल किया—

संन्यासियों
का धर्म तो
त्याग है, फिर
आप...

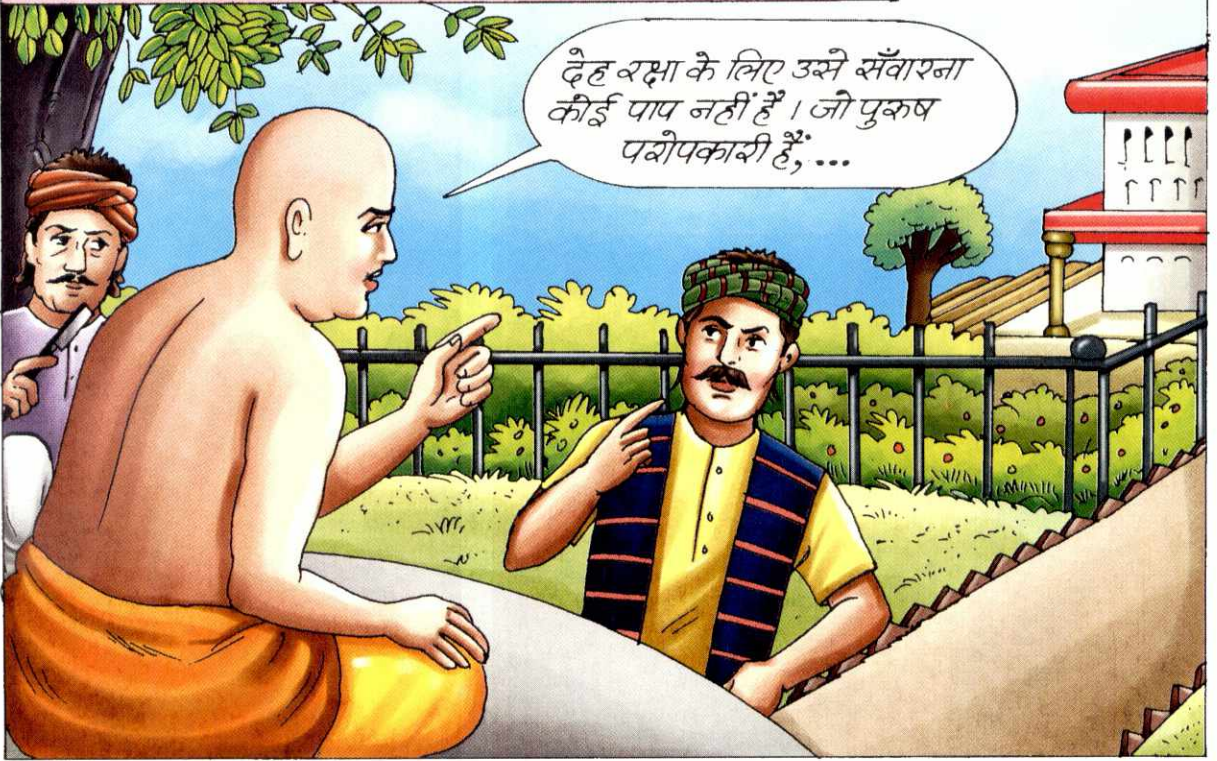
...देह-
विभूषा में
क्यों लगी
है ?

स्वामीजी ने हँसते हुए उत्तर दिया—

अगर बाल
बढ़ाने में ही त्याग
है, तब तो रीछ
सबसे बड़ा त्यागी
हुआ ।

यह कहकर स्वामीजी ने उस सज्जन को उपदेश दिया कि—

देह रक्षा के लिए उसे सँवारना
कोई पाप नहीं है। जो पुरुष
परीपकारी है; ...



... उन्हें अपनी देह
की रक्षा करना अति-
आवश्यक है, ताकि वह
उपकार-कार्य अच्छी
प्रकार से कर सकें।



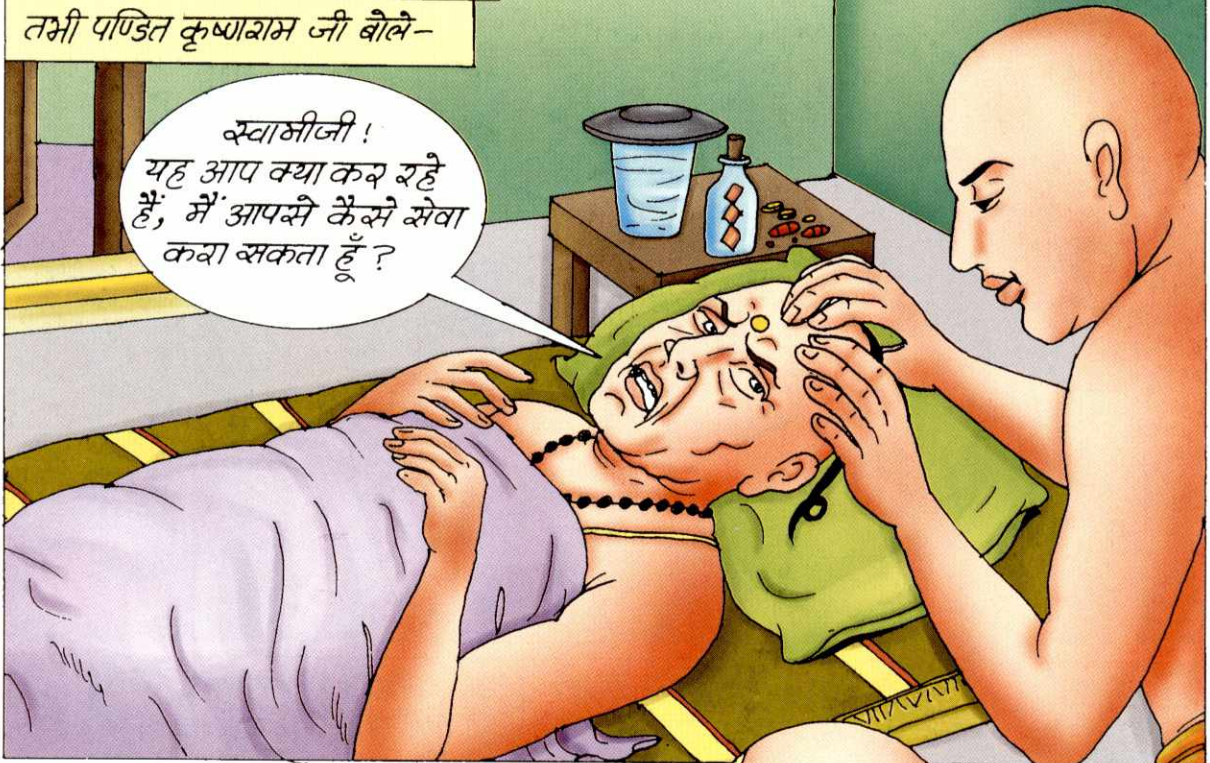
बाहरी दिखावे के धार्मिक चिन्ह मनुष्य को सच्चा धार्मिक नहीं बनाते। शरीर धर्म का साधन है। शरीर को स्वस्थ एवं सबल रखने से ही धर्म का पालन हो सकेगा। 10

सेवा का भाव

भड़ौंच में स्वामीजी के साथ पण्डित कृष्णराम भी रहते थे। एक दिन पण्डित कृष्णराम को बुझावर आ गया। स्वामी दयानन्दजी स्वयं उनका स्मिदबाने लगे।

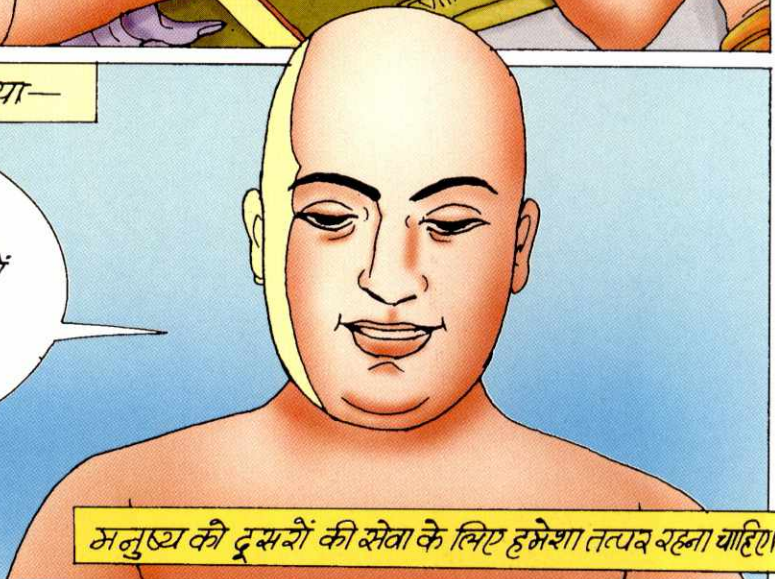
तभी पण्डित कृष्णराम जी बोले—

स्वामीजी!
यह आप क्या कर रहे हैं, मैं आपसे कैसे सेवा करा सकता हूँ?



स्वामीजी ने हँसकर जवाब दिया—

पण्डितजी! दूसरों की सेवा करना मनुष्य का धर्म है। यदि बड़े छोटी की सेवा न करेंगे, तो छोटी में सेवा का भाव कैसे आयेगा?



मनुष्य की दूसरों की सेवा के लिए हमेशा तत्पर रहना चाहिए।

बच्चों! सेवा करना मनुष्य का एक महान् गुण है। सेवा करने से कोई छोटा नहीं होता, बल्कि वह महान बनता है। इसलिए सबकी सेवा करनी चाहिए।

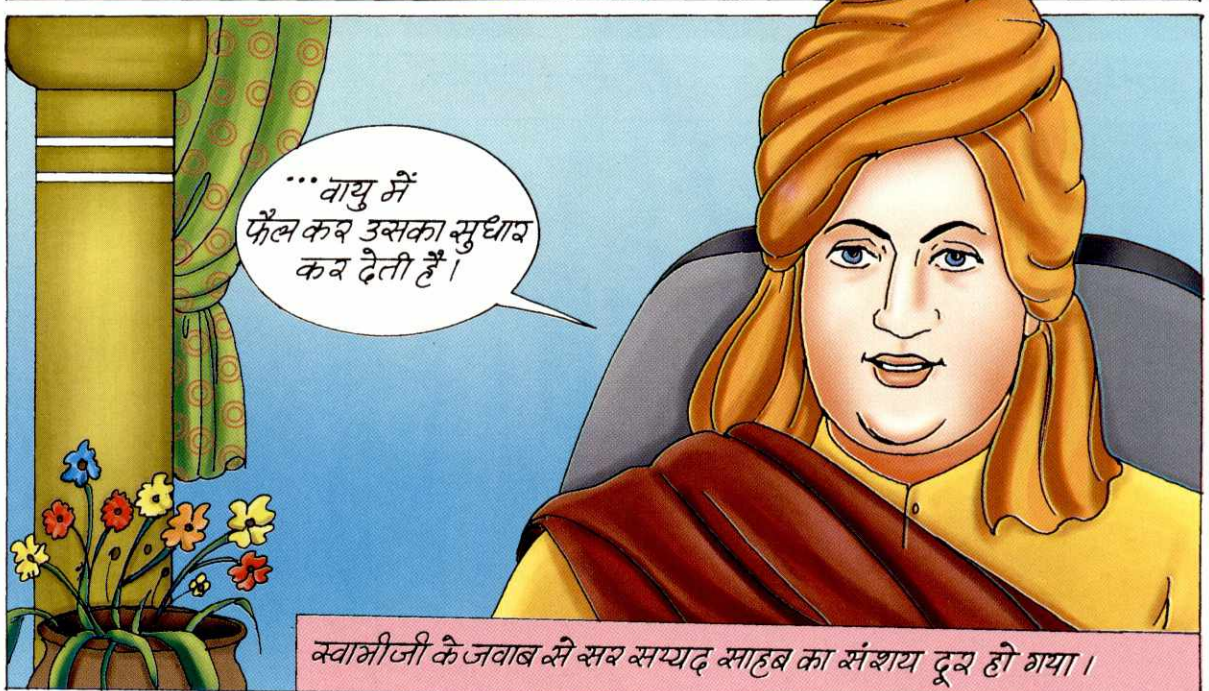
सर सय्यद अहमद खां और हवन

अलीगढ़ में एक दिन सर सय्यद
अहमद खां स्वाामीजी से मिलने
गये और कहने लगे—

स्वाामीजी! आपकी
अन्य बातें तो युक्ति संगत हैं;
पर यह सभक में नहीं आता
कि थोड़े से हवन से वायु
का सुधार कैसे हो
सकता है ?

स्वाामीजी ने कहा—

जैसे थोड़े से बघार
(छोँक) से सारी दाल
सुवासित हो जाती
हैं और...

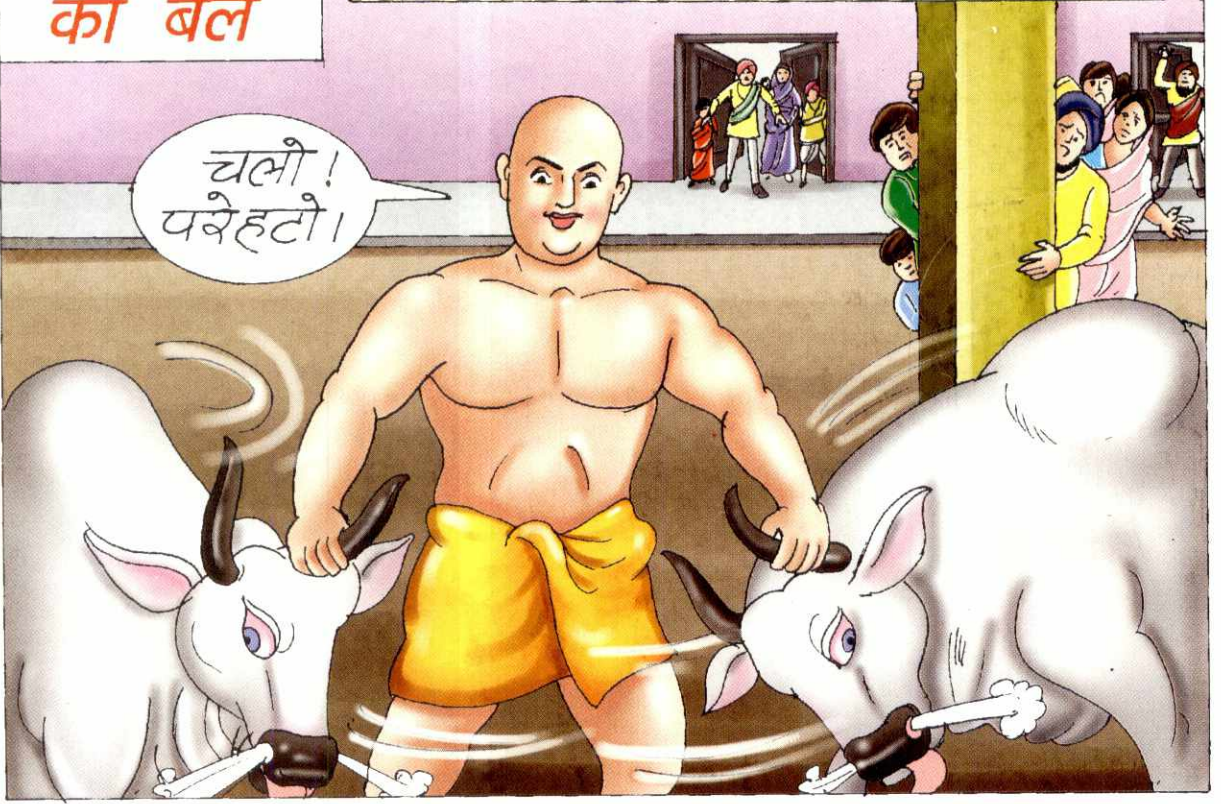


स्वामीजी के जवाब से सब संशय साहब का संशय दूर हो गया।

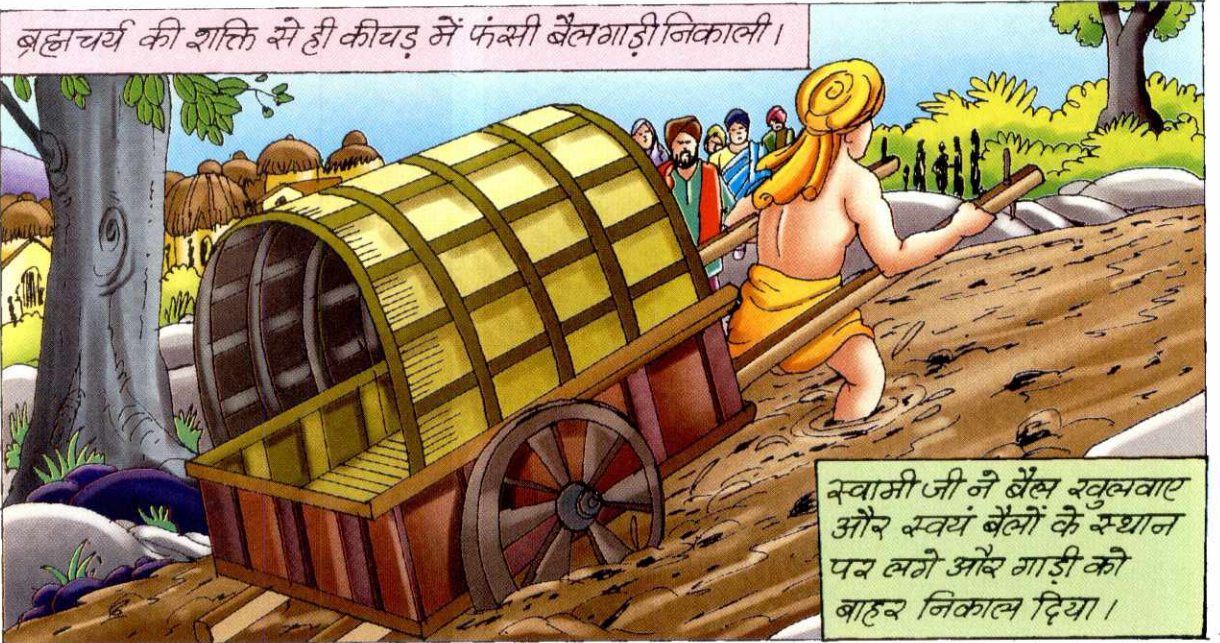
बच्चों ! हवन करने से वायु शुद्ध होकर सारे संसार का कल्याण होता है। इसलिए हवन को अपनाओ और संसार का कल्याण करो।

ब्रह्मचर्य का बल

शक्ति मानसिक हो या शारीरिक, दोनों का स्थान हमारे जीवन में महत्वपूर्ण है। स्वामीजी अद्भुत बल के धनी थे, उन्होंने एक बाघ दो साँड़ों को लड़ते हुए छुड़ाया—



ब्रह्मचर्य की शक्ति से ही कीचड़ में फंसी बैलगाड़ी निकाली।



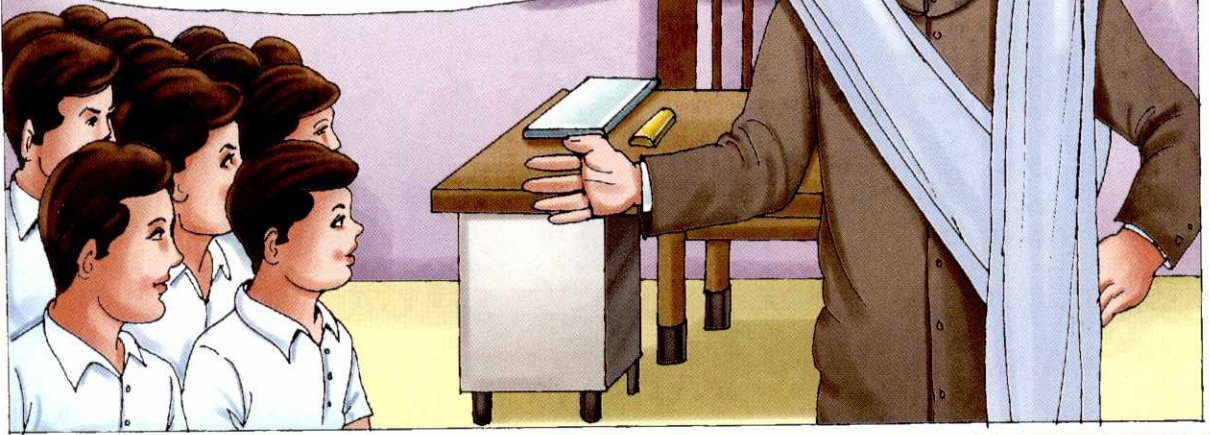
स्वामी जी ने बैल खुलवाए और स्वयं बैलों के स्थान पर लगे और गाड़ी को बाहर निकाल दिया।

हम जो भोजन करते हैं, उससे रस, रक्त माँस आदि के बाद अन्तिम धातु वीर्य बनती है। उसकी रक्षा करना ही ब्रह्मचर्य है। ब्रह्मचर्य से शारीरिक व मानसिक शक्ति का विकास होता है। देखो महर्षि की अद्भुत ताकत।

ईंट मारने वालों को लड्डू

अमृतसर में एक बाल-पाठशाला के अध्यापक
ने एक दिन अपने छात्रों से कहा—

बच्चों ! आज हम सब स्वामीजी
की कथा में चलेंगे। तुम अपनी भोलियों
में ईंट, शोड़े और पत्थर भरेकर मेरे साथ
चलना। जब मैं संकेत करूँ, उसी समय
तुम कथा कहने वाले पर...



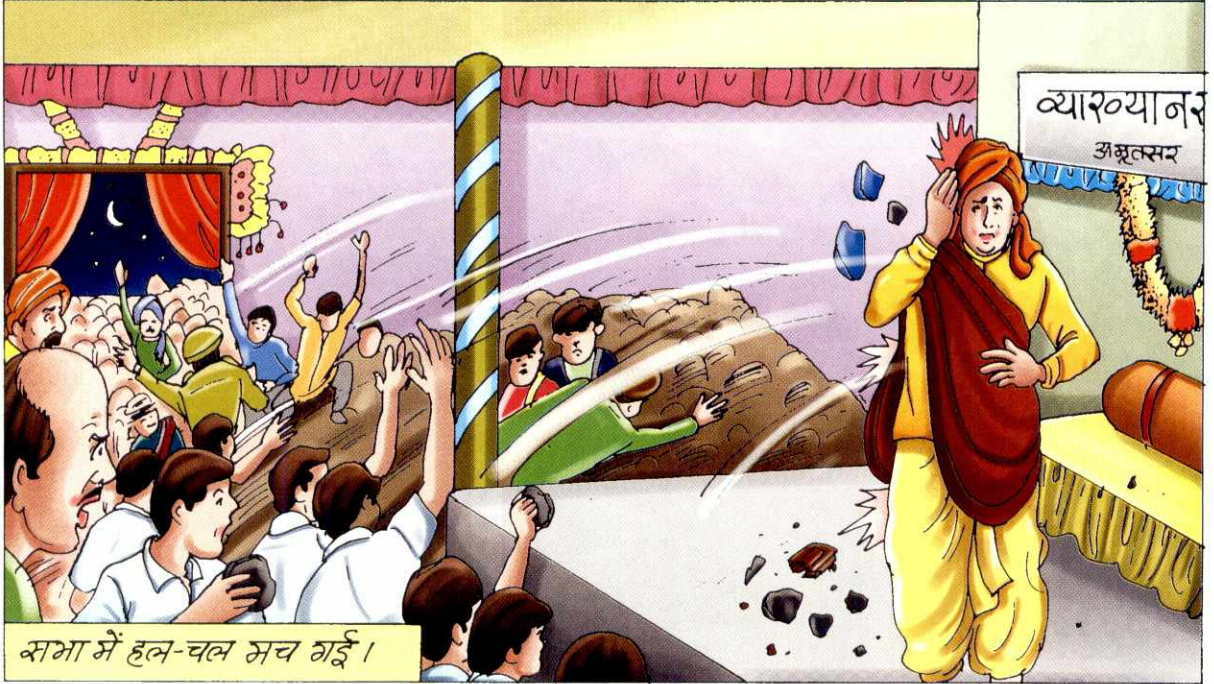
...ईंट, शोड़े और पत्थर
फेंक देना, मैं तुम्हें लड्डू
दूँगा।

जी,
गुरुजी!

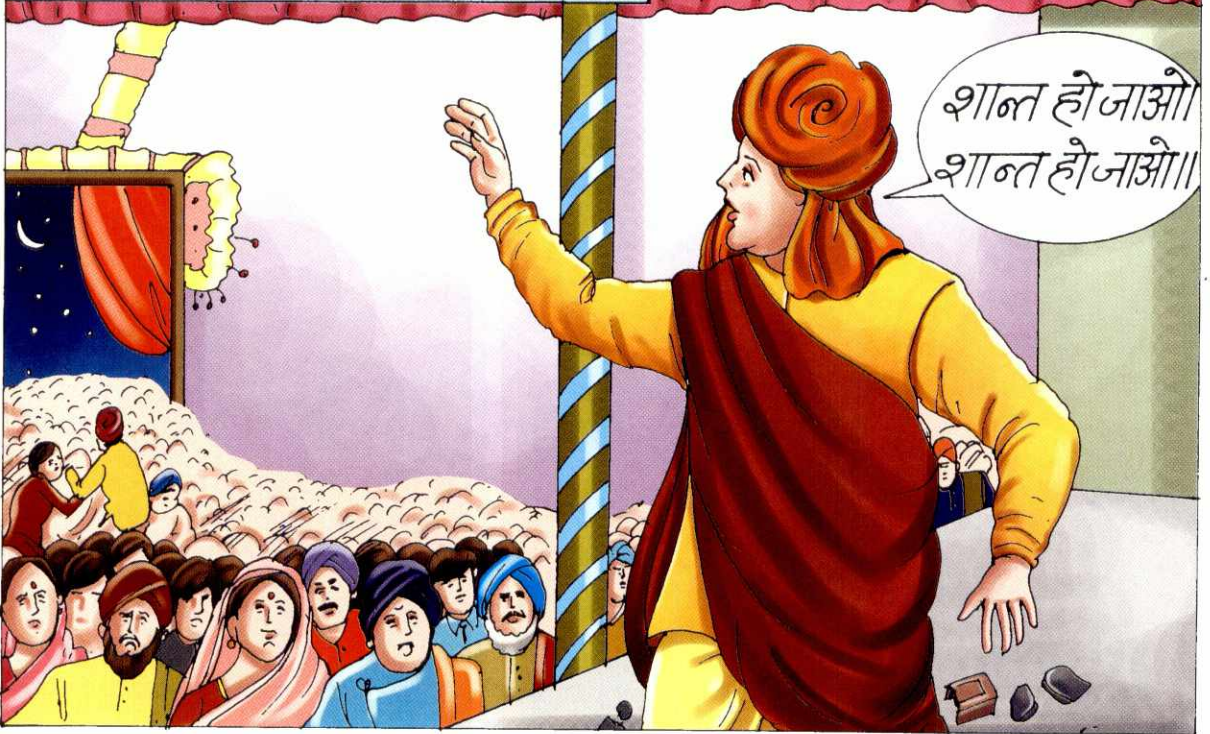


सबोथ बालकों ने ईंट, शोड़े और पत्थरों से अपनी
भोलियां भर लीं, और अध्यापक के साथ चल पड़े।

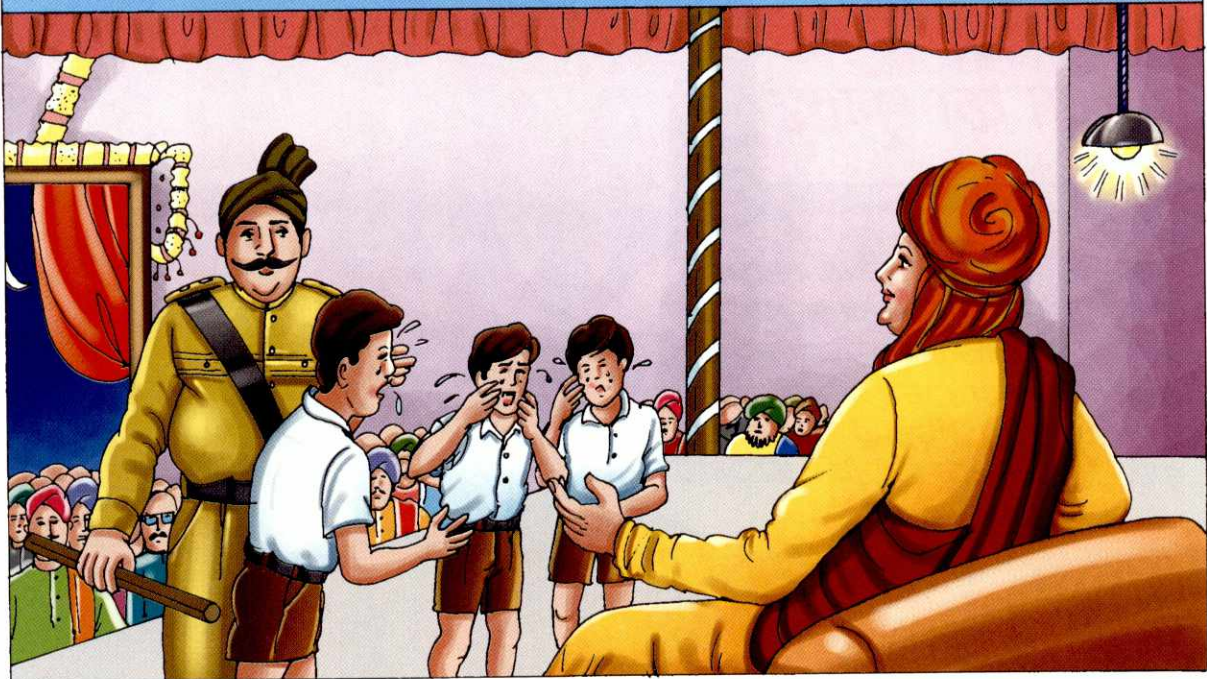
व्याख्यान रात्रि के आठ बजे समाप्त हुआ करता था। जब थोड़ा अँधेरा होने लगा तब अध्यापक का संकेत पाकर बालक स्वामीजी पर ईंट, शोड़े और पत्थर फेंकने लगे।



स्वामीजी ने खड़े होकर सब को शान्त कर दिया।



जब सब शान्त होकर बैठ गये तब पुलिस कुछ बालकों को एकड़ कर स्वामीजी के सामने ले आई। तब बालक फूट-फूट कर रोने लगे, स्वामीजी ने उन्हें ढाँढ़स बंधा कर उनसे ऐसा कार्य करने का कारण पूछा, तो बालकों ने साश वृत्तान्त सच-सच बता दिया।



उसके बाद स्वामीजी ने बाजार से लड्डू मंगाकर बालकों को दिये। और कहा-



(1) बच्चों का मन कोमल होता है। उन्हें गलत शिक्षा नहीं देनी चाहिए। (2) गलत शिक्षा से बिगड़े कोमल बच्चों को प्रेम व धैर्य से अच्छी शिक्षा देकर उन्हें सुधारना चाहिए।

मस्तक-शृंगार या आत्मा का शृंगार

प्रयाग में स्वामीजी के पास नाना प्रकार के तिलक-
धारी लोग बैठे थे। स्वामीजी उन्हें कह रहे थे—

मस्तक-शृङ्गार करने की अपेक्षा
ईश्वरोपासना द्वारा आत्म-शृङ्गार किया
करो। ऐसे तिलक लगाने से तुम्हारा क्या
लाभ है? आडम्बर बचना महात्माओं
का काम नहीं। शोक, महाशोक, तिलक
आदि चिह्न बनाने में लोगों की रुचि
रहती है...

...योगाभ्यास
में नहीं। मूर्खों! जितने
समय में तुम यह तिलक लगाते
रहते, उतने समय में गायत्री
क्यों न जप ली?

माला तिलक धारण करने से न तो स्वभाव सुधारता है और न आत्म-कल्याण होता है। ईश्वर भक्ति, गायत्री
जाप करने से ही कल्याण सम्भव है।

गुरु सेवा गुरु दक्षिणा

सच्चे गुरु की तलाश करते हुए ३६ वर्ष की उम्र में
दयानन्द की भेंट गुरु विश्वानन्द से हुई। जब
दयानन्द गुरु के द्वार पर पहुँचे—

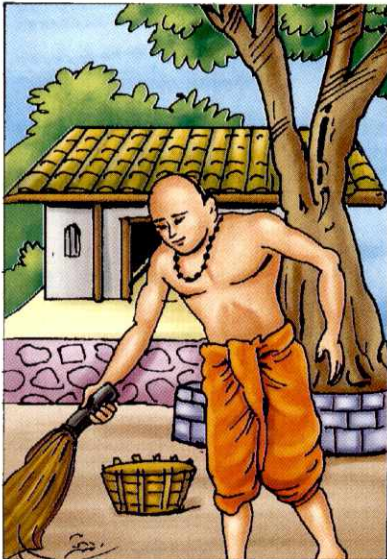
कौन?

मैं यही जानने आया हूँ
कि मैं कौन हूँ? मुझे सत्य
की खोज है। मैंने वेदांत और
योग का अध्ययन किया है
और सावस्वत ग्रंथों से
संस्कृत व्याकरण भी पढ़ा है।
फिर भी मुझे शांति नहीं
मिली।

फिर दयानन्द ने
बिना किसी हिचक
के उन ग्रंथों को
यमुना में फेंक
दिया।

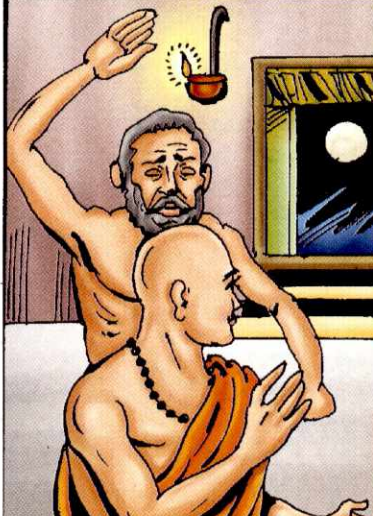
जो आज्ञा!

पहले इन ग्रंथों को यमुना में
फेंक कर मेरे पास आओ।



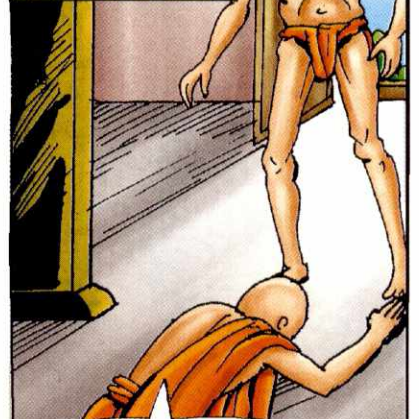
एक बार भूमि बुहारते
दयानन्द से कुछ कचरा बह
गया और गुरुजी का पैर
उस कचरे पर पड़ गया...

... गुरुजी नाशज हीकर
दयानन्द की मासने लगे...



... वे बिना बुझा माने गुरु
की मास सहते रहे।

दयानन्द ने गुरु
के चरणों में
अपना शीशा
नवाथा और कहा—



गुरुजी! मुझे मासने से
आपकी जो पीड़ा हुई उसके
लिए क्षमा चाहता हूँ।

स्वामी दयानन्द, विश्वानन्द के आश्रम में ढाई वर्ष तक रहे। उन दिनों, शिक्षा प्राप्ति के बाद गुरु-दक्षिणा देने की प्रथा थी। विदा होते समय विश्वानन्द ने अपने इस होनहार शिष्य से पूछा—

अब तुम पूर्ण ज्ञान प्राप्त कर चुके हो। दयानन्द! बताओ गुरु दक्षिणा के रूप में मुझे क्या दे रहे हो?

मैं चाहता हूँ दयानन्द! तुम अपने इस ज्ञान को सब दिशाओं में फैला दो, संसार अज्ञान के अंधकार में डूबा पड़ा है।

गुरुदेव! गुरु दक्षिणा में देने के लिए मेरे पास केवल यह जरा सी लौंग हैं। इन्हें ही गुरु-दक्षिणा के रूप में स्वीकार करें।

मैं अक्षरशः आपके आदेशों का पालन करूँगा गुरुदेव।

गुरु आज्ञा के बाद...

संसार में केवल वेद ही ज्ञान का प्रकाश दे सकते हैं।

दयानन्द सत्य का प्रकाश करने निकल पड़े।

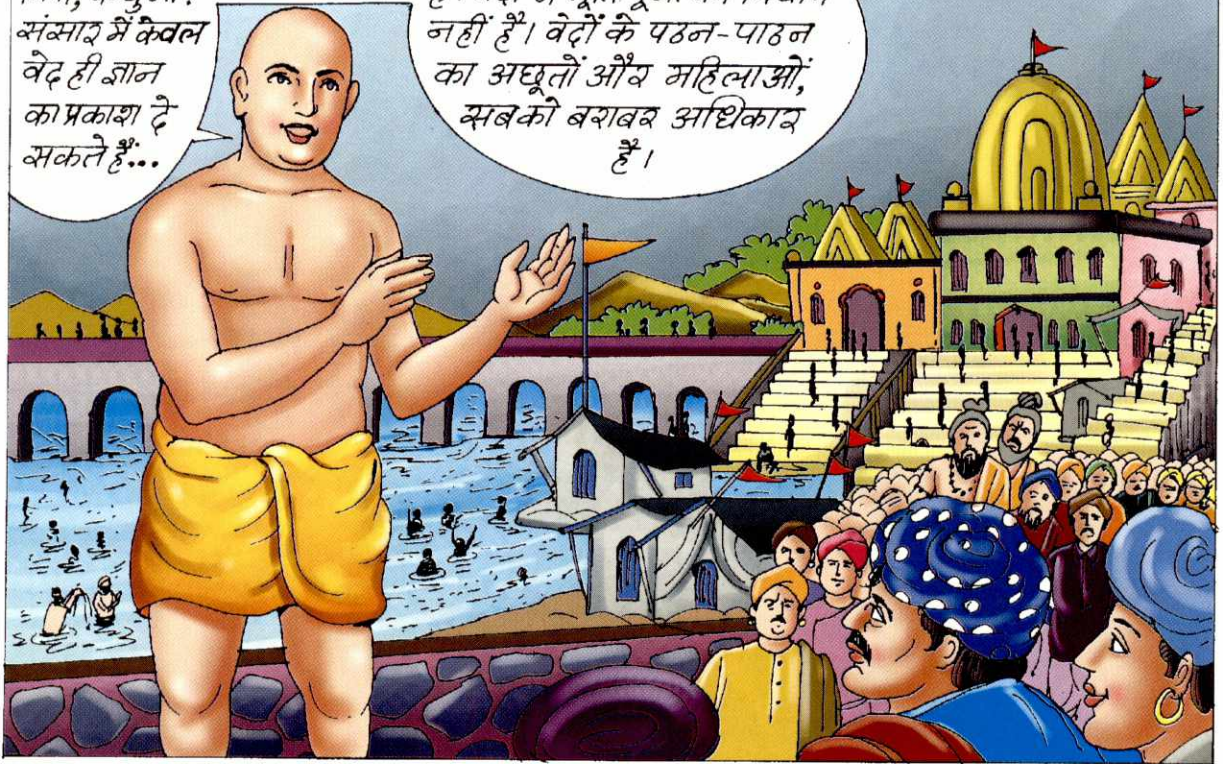
बच्चों! माता-पिता और गुरु हमारी भलाई के लिए ही हमें डाँट व ताड़ना देते हैं। इसलिए उनकी बात का कभी बुरा नहीं मानना चाहिए।

मूर्ति पूजा पाखण्ड है।

अपनी शिक्षा पूरी करने के बाद गुरु आज्ञासे
दयानन्द हरिद्वार के 'कुंभ मैले' में प्रवचन कर
रहे थे। जब मूर्ति पूजा खण्डन की बात आयी
तो कुछ लोग इस बात से सहमत थे
और कुछ विरोधी भी थे।

भित्तों, बन्धुओं!
संसार में केवल
वेद ही ज्ञान
का प्रकाश दे
सकते हैं...

...मूर्ति पूजा पाखण्ड
है। वेदों में मूर्ति पूजा का विधान
नहीं है। वेदों के पठन-पाठन
का अछूतों और महिलाओं,
सबको बराबर अधिकार
है।



स्यामीजी की बातों
से कुछ लोग
सहमत थे, और
कुछ असहमत थे।

ये पंडे-पुरोहित अपना हित साधने
के लिए तुम्हें अज्ञान के अंधेरे
में डबवते...

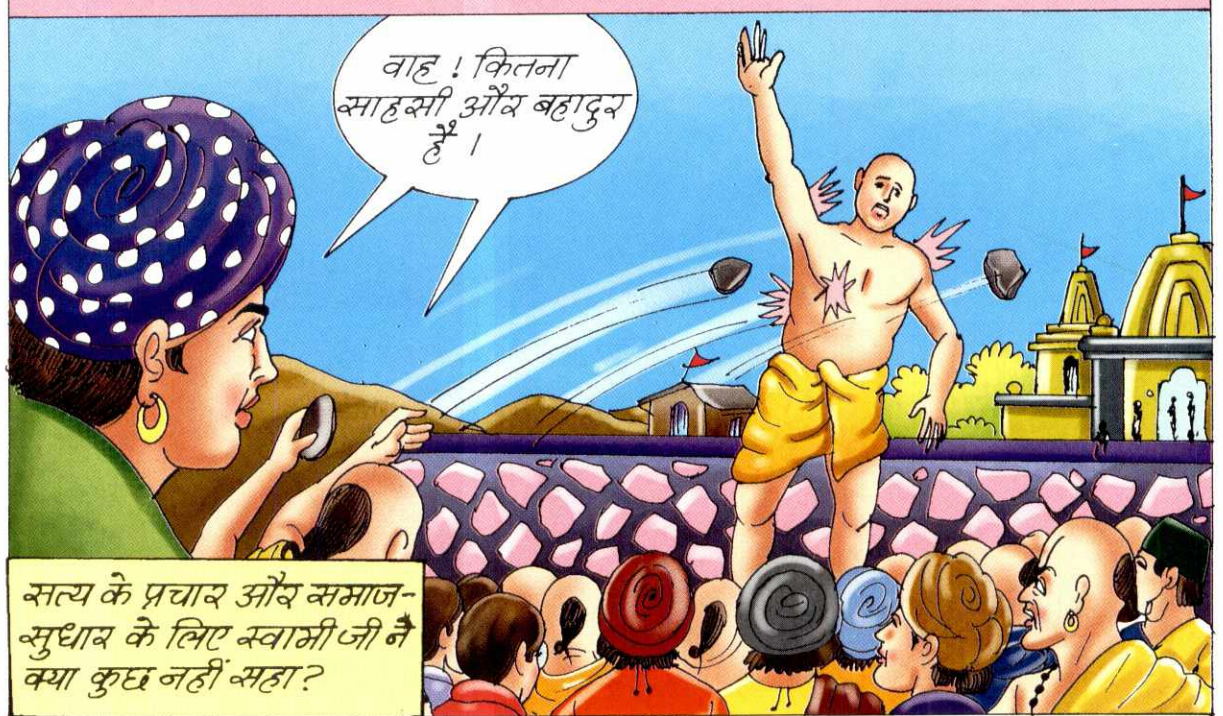
...हैं। उनकी
बातें मत सुनो।



दयानन्द की बातों से असहमन लोग पथराव करने और नारै लगाने लगे।



दयानन्द ने लोगों के सब प्रहार अपनी पथराव जैसी छाती पर सहै। यह देव विरोधी दल के लोग भी हक्के-बक्के रह गये।



सत्य बोलने से झूठे धन्धे चलाने वालों की हानि होती है और वे उपद्रव करते हैं। मूर्तिपूजा का विधान वेदों में नहीं है। सत्य बोलने वालों को कष्टों से नहीं डरना चाहिए।

जगन्नाथ को क्षमादान

प्रचार हेतु स्वामीजी जौधपुर गये। वहाँ उन्होंने जौधपुर नरेश को नन्ही नाम की नाचने वाली के साथ देखा तो स्वामीजी विव्न्न हो उठे।

इतने बुद्धिमान और समर्थ आदमी के सम्बन्ध एक वैश्या के साथ? छि: छि:!

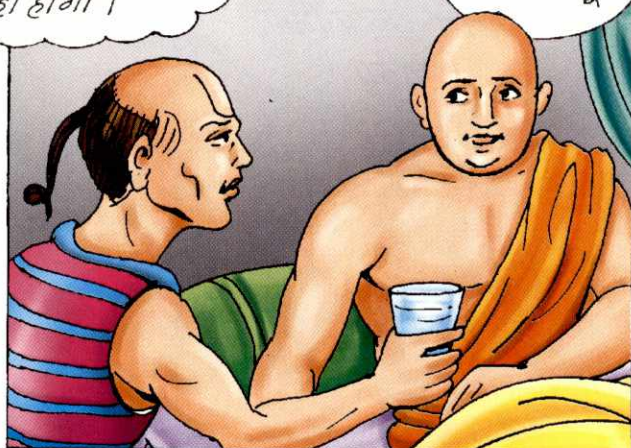
भला एक राजा का नाचने वाली से कैसा सम्बन्ध?



उसी दिन से नन्हीजान स्वामीजी से बदला लेने की ताक में रहने लगी—

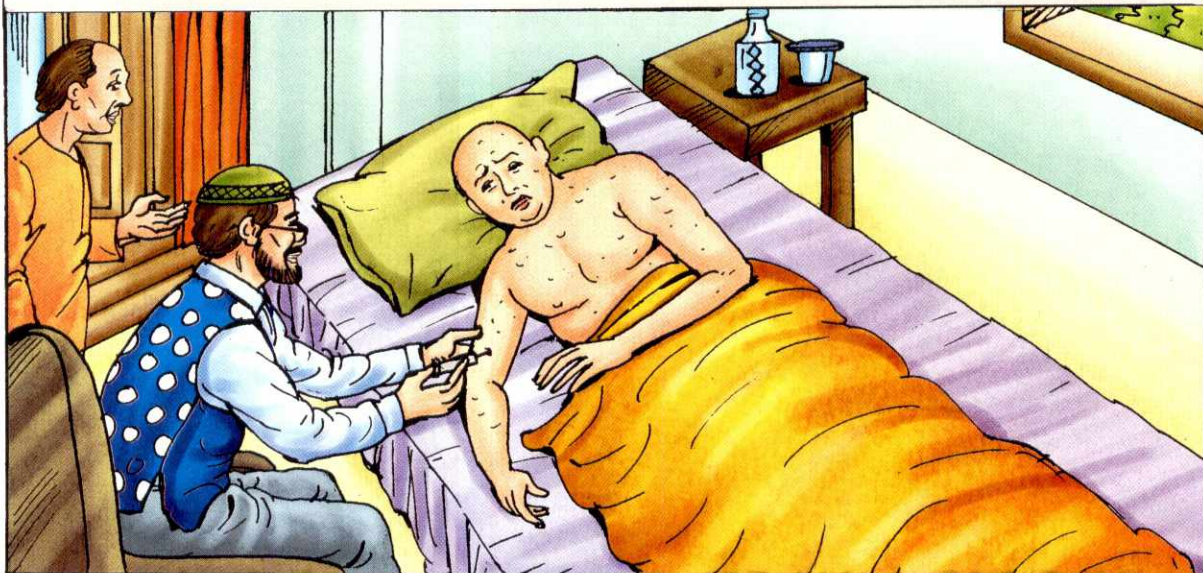
यह फकीर बहुत गड़बड़ कर रहा है, इसका मुँह बन्द करना ही होगा।

स्वामीजी! यह रहा आपका दूध।



अंग्रेजों व नन्हीजान के षड्यन्त्र से रसोइये ने काँच युक्त दूध में ज़हर मिला कर स्वामीजी को दे दिया। और स्वामीजी पी गये।

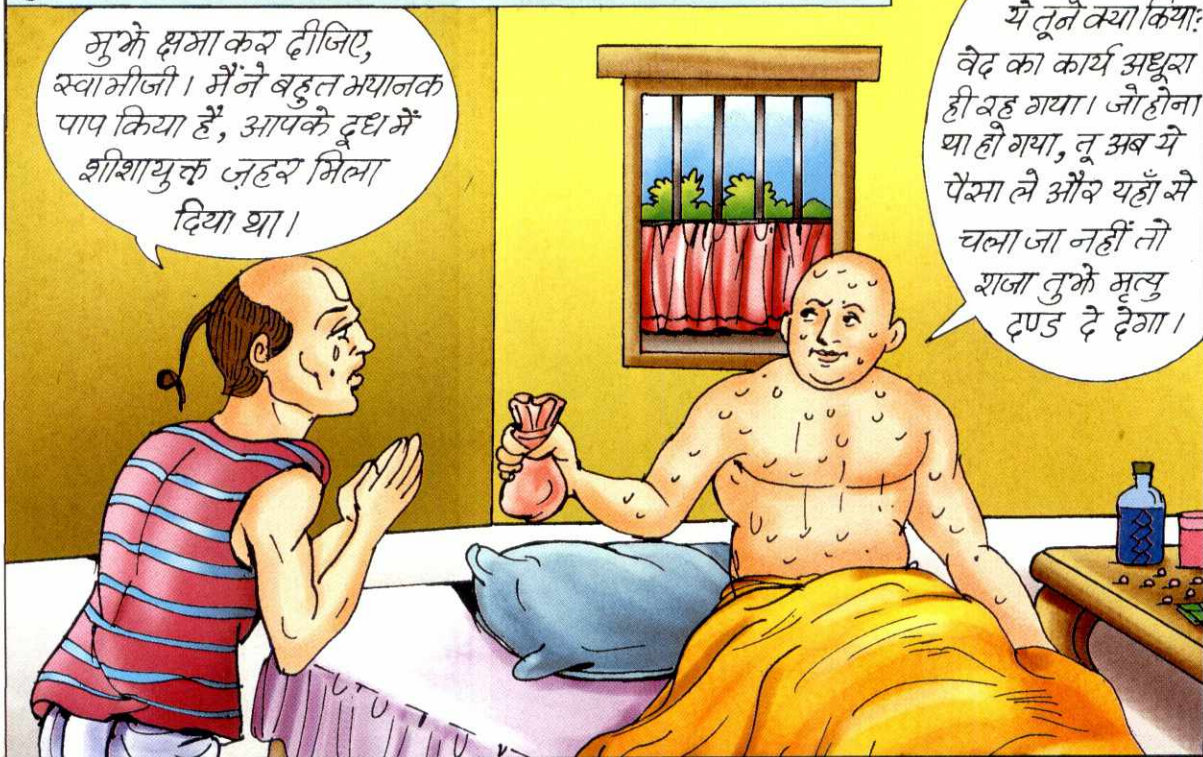
स्वामीजी के दूध में जहर मिला कर जगन्नाथ द्वारा पिला देने पर स्वामीजी के पेट में भयंकर दर्द होने लगा। प्रातः काल डॉ. अलीमर्दान खाँ ने इंजेक्शन व अन्य दवाओं के द्वारा स्वामीजी के शरीर में औषध विष प्रवेश करा दिया।



स्वामीजी के पूरे शरीर से जहर फूटने लगा अंततः रस्सोइथे को अपनी शक्ति महसूस हुई, उसने स्वामीजी के पास जाकर माफ़ी माँगी और कहा—

मुझे क्षमा कर दीजिए, स्वामीजी। मैंने बहुत भयानक पाप किया है, आपके दूध में शीशायुक जहर मिला दिया था।

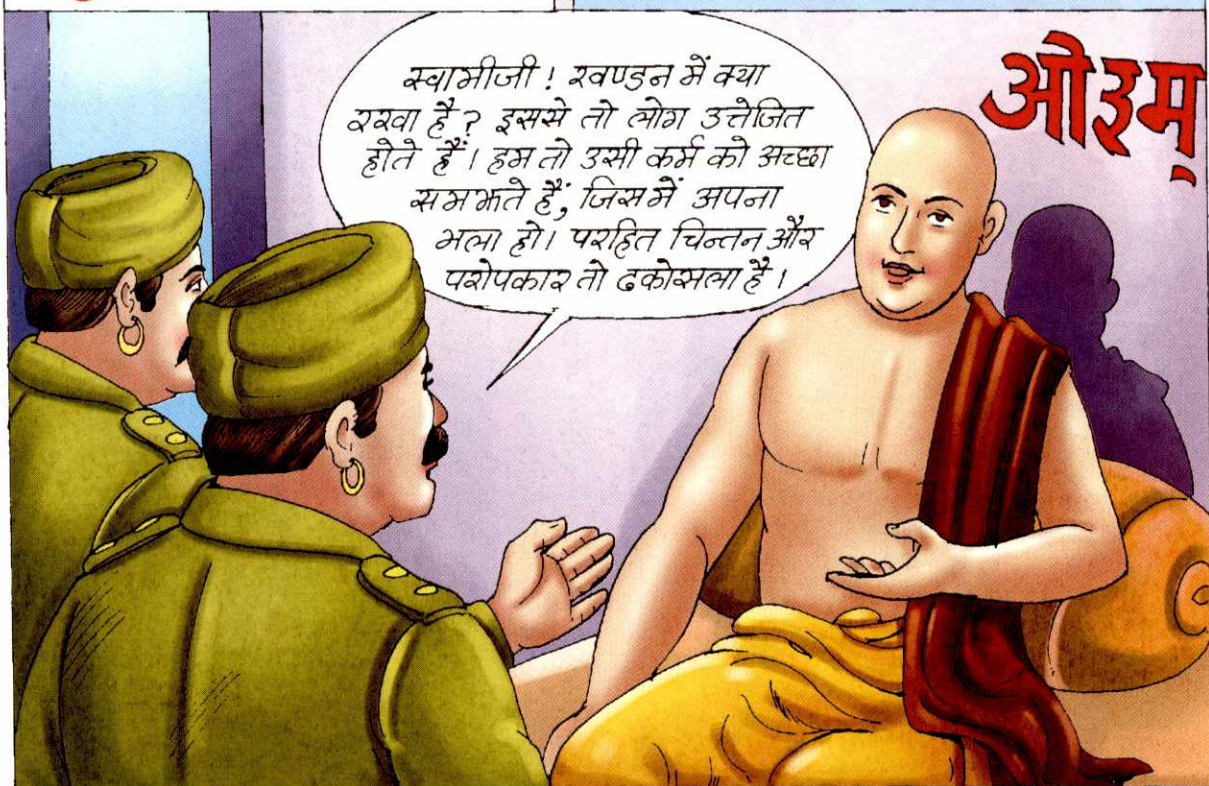
ये तूने क्या किया: वेद का कार्य अधूरा ही रह गया। जौ हीना था ही गया, तू अब ये पेंसा ले और यहाँ से चला जा नहीं तो राजा तुझे मृत्यु दण्ड दे देगा।



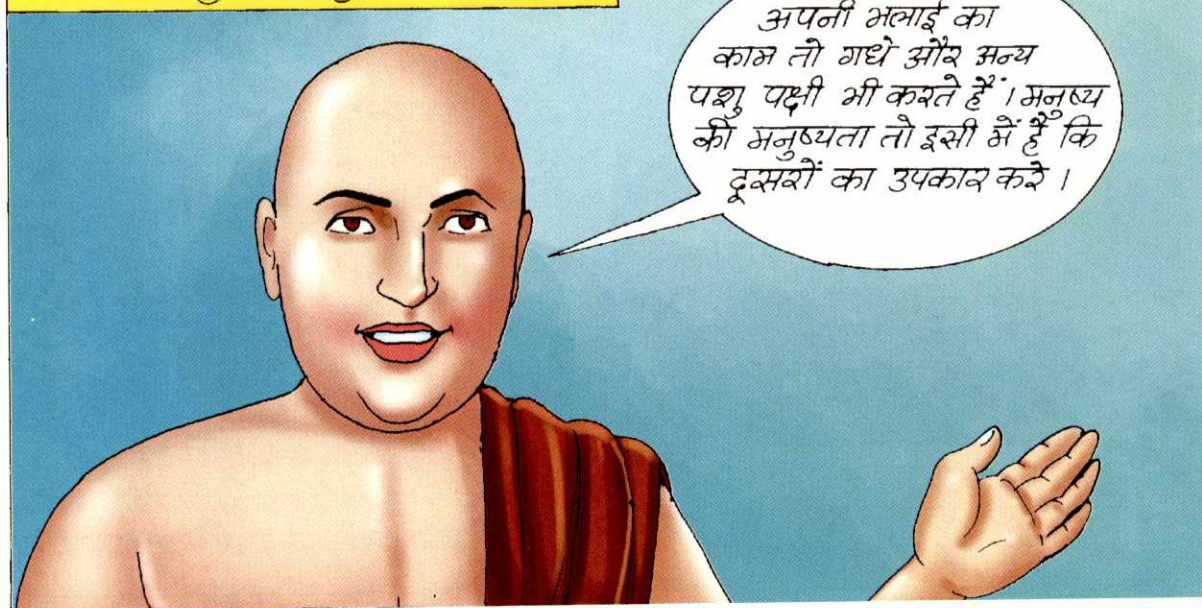
महर्षि दयानन्द परम योगी थे। उन्होंने तो विष देने वालों को भी माफ़ किया। हम साधारण लोगों को भी यथा सम्भव क्षमाशील होना चाहिए।

मनुष्य की मनुष्यता

एक दिन दौ उच्चराज-कर्मचारी स्वामीजी से मिलने उनके निवास स्थान पर आये, और कहने लगे—



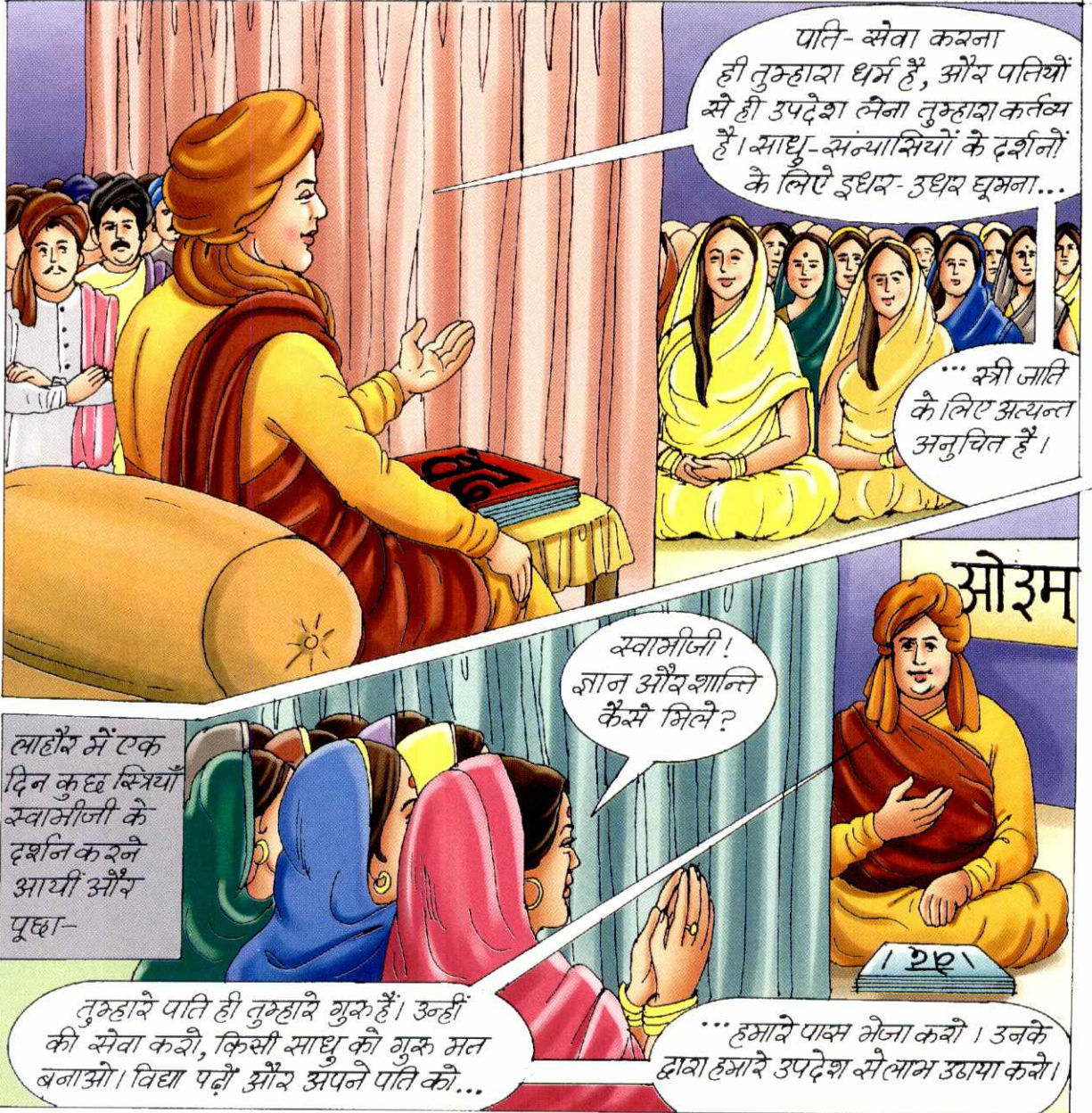
स्वामीजी ने मुस्कराते हुए उत्तर दिया—



बच्चों! दूसरों की भलाई करने और सब जीवों को सुख पहुँचाने से ही हमें सच्चा सुख मिलता है, यही मनुष्यपन है।

स्त्रियों के मुख्य धर्म

एक बार स्वामीजी भंडोच में वाणी द्वारा अमृत वर्षा कर रहे थे। तभी बहुत से भारवि ब्राह्मण और स्त्रियां स्वामीजी का उपदेश सुनने आए। स्त्रियों में अधिक संख्या अद्वैतानन्द की चेलियों की थी। स्वामीजी स्त्रियों से वार्तालाप करना नहीं चाहते थे, पर उनके विशेष आग्रह पर एक पर्दा अपने और उनके बीच डालकर उन्हें उपदेश दिया—



लाहौर में एक दिन कुछ स्त्रियाँ स्वामीजी के दर्शन करने आयीं और पूछा—

तुम्हारे पति ही तुम्हारे गुरु हैं। उन्हीं की सेवा करो, किसी साधु को गुरु मत बनाओ। विद्या पढ़ो और अपने पति को...

स्वामीजी!
ज्ञान और शान्ति
कैसे मिले?

...हमारे पास भेजा करो। उनके द्वारा हमारे उपदेश से लाभ उठाया करो।

देवियों को कभी किसी को गुरु बनाकर उसकी सेवा नहीं करनी चाहिए। घर परिवार के काम करते हुए गायत्री जाप और वेद शास्त्रों का स्वाध्याय करें, अपना जीवन पवित्र बनाएँ।

ईसाई और पुनर्जन्म

एक बार स्वामीजी बुधियाना में प्रवचन दे रहे थे। उसी समय दो ईसाई प्रवचन स्थल पर आये और स्वामीजी से पुनर्जन्म होता है या नहीं, उस पर झंझा की।

स्वामीजी ने उन दोनों से एक सवाल किया—

तुम पहले यह बताओ! श्वाना-पीना-सीना आदि देहधारी जीव के लिए सम्भव है या देह रहित जीव के लिए?

तो तुम मानते हो कि जीव का एक शरीर को छोड़कर दूसरा शरीर धारण करना पुनर्जन्म है।

स्वामीजी! यह तो केवल देहधारी जीव के लिए ही सम्भव है।

जी, स्वामीजी!

जो आत्माएं स्वर्ग में जाकर अनेक भोग भोगेंगी, वह बिना देह धारण किये कैसे भोगेंगी? तो क्या वह उनका पुनर्जन्म न होगा?

दोनों ईसाई अवाक् रह गये।

बच्चों! पुनर्जन्म एक परम सत्य है। अपने किये कर्मों के फल हमें इस जन्म में और अगले जन्म में भी जरूर भोगने पड़ते हैं। इसलिए पुनर्जन्म को याद रखकर हम कभी गलत काम न करें।

ईश्वर—मिलाप का उपाय

एक बार जब स्वामीजी कलकत्ता में थे। वहाँ आदि-ब्रह्म समाज के उपदेशक पं. हैमचन्द्र ने स्वामीजी से एक सवाल किया—

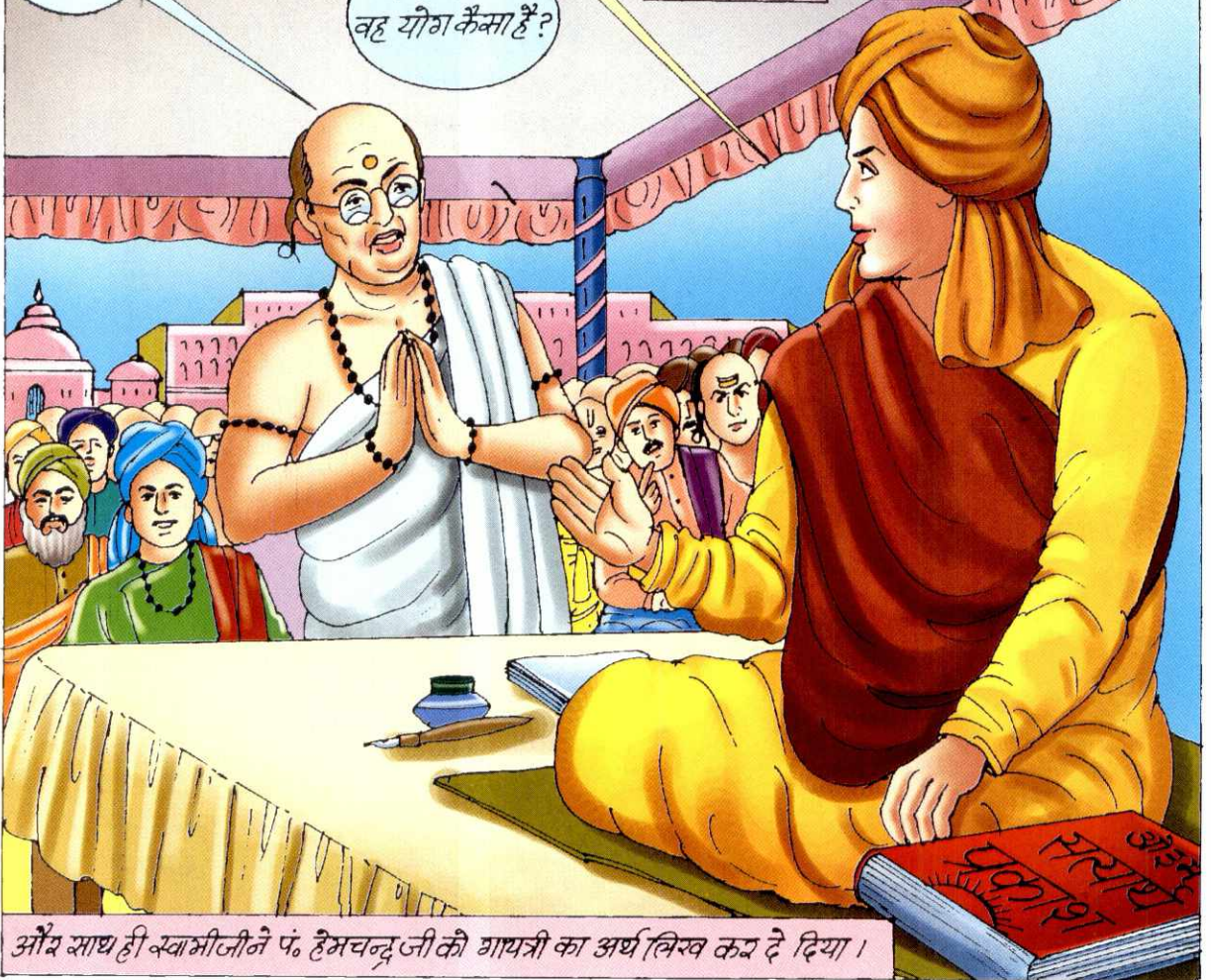
स्वामीजी!
ईश्वर से
मिलने का
क्या उपाय
है?

लम्बे समय तक योग
करने से ईश्वर की
प्राप्ति हो सकती
है।

स्वामीजी!
वह योग कैसा है?

इसके उत्तर
में स्वामीजी
ने अष्टांग
योग की
व्याख्या करके
सुनाई और
उपदेश दिया—

तीन घड़ी बात
रहे तब उठकर गायत्री
का अर्थ सहित ध्यान
किया करो। गायत्री मंत्र
ही ईश्वर से मिलने
की सीढ़ी है।



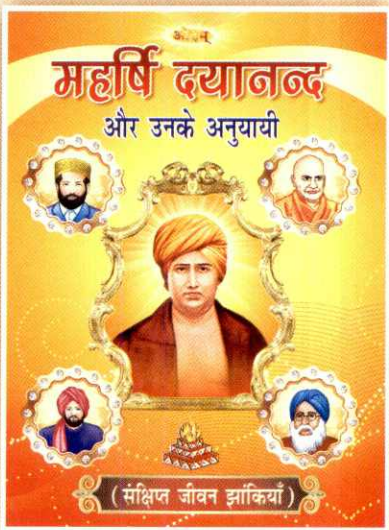
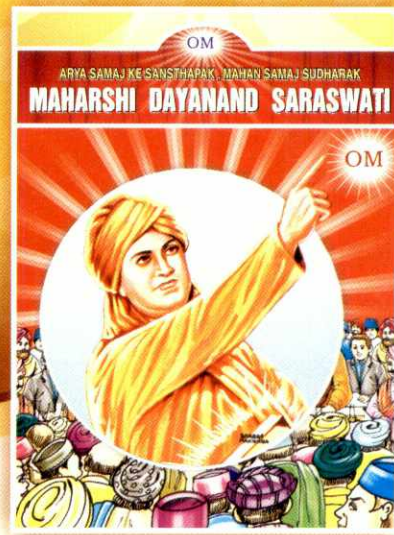
और साथ ही स्वामीजीने पं. हैमचन्द्र जीको गायत्री का अर्थ बखर कर दे दिया।

ऊँच-नीच का भेदभाव सबसे बड़ा पाप है। सब मनुष्यों को अपने समान समझकर सबको अपना बनाना आज का सबसे बड़ा पुण्य और धर्म है।

महर्षि दयानन्द जी के विषय में विभिन्न महापुरुषों के विचार

1. महर्षि दयानन्द स्वराज्य के सर्वप्रथम सन्देशवाहक तथा मानवता के उपासक थे। - लोकमान्य तिलक
2. मैंने सत्यार्थ प्रकाश पढ़ा और उससे मेरे जीवन का लक्ष्य बदल गया। आर्य समाज के सिद्धांत सार्वभौमिक हैं। उन्हें हराने की किसी में शक्ति नहीं है। - हुतात्मा रामप्रसाद बिस्मिल
3. स्वामी दयानन्द के विषय में मेरा मन्तव्य यह है कि वह हिन्दुस्तान के आधुनिक ऋषियों, सुधारकों और श्रेष्ठ पुरुषों में अग्रणी थे। उनका ब्रह्मचर्य, समाज सुधार, स्वातन्त्र्य स्वराज्य, सर्वप्रतिप्रेम, कार्यकुशलता आदि गुण लोगों को मुग्ध करते थे। - महात्मा गांधी
4. स्वामी दयानन्द के जीवन में सत्य की खोज दिखाई देती है, इसलिए वे केवल आर्य समाजियों के लिये नहीं अपितु समग्र संसार के लिए पूजनीय हैं। - कस्तूरबा गांधी
5. महर्षि दयानन्द सरस्वती उन महापुरुषों में से थे, जिन्होंने आधुनिक भारत का विकास किया जो उसके आचार सम्बंधी पुनरुत्थान तथा धार्मिक पुनरुत्थान के उत्तरदाता हैं। हिन्दू समाज का उद्धार करने में आर्य समाज का बहुत बड़ा हाथ है। संगठन, कार्य-दृढ़ता, उत्साह और समन्वयपालकता की दृष्टि से आर्य समाज की समता कोई और समाज नहीं कर सकता। - नेताजी सुभाषचन्द्र बोस
6. स्वामी दयानन्द संस्कृत के बड़े विद्वान् और वेदों के बहुत बड़े समर्थक थे। उत्तम विद्वान् के अतिरिक्त साधु स्वभाव के व्यक्ति थे। उनके अनुयायी उनको देवता मानते थे और बेशक वे इसी लायक थे। हमसे स्वामी दयानन्द की बहुत मुलाकात थी। हमेशा इनका निहायत आदर करते थे। वह ऐसे व्यक्ति थे, जिनकी उपमा इस वक्त हिन्दुस्तान में नहीं है। - महर्षि के समकालीन-सर सैयद अहमद खाँ, (अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी के संस्थापक)
7. मैंने स्वराज्य शब्द सर्वप्रथम महर्षि दयानन्द के ग्रन्थों से सीखा। - दादाभाई नौरोजी
8. स्वामी दयानन्द स्वाधीनता संग्राम के सर्वप्रथम योद्धा और हिन्दू जाति के रक्षक थे। - महान् क्रान्तिकारी वीर सावरकर
9. स्वामी दयानन्द जी का सबसे बड़ा योगदान यह था कि उन्होंने देश को किंकर्तव्यविमूढ़ता के गहरे गड्ढे में गिरने से बचाया। उन्होंने भारत की स्वाधीनता की वास्तविक नींव डाली। - लौहपुरुष सरदार बल्लभभाई पटेल
10. महर्षि दयानन्द ने राजनैतिक, धार्मिक और सांस्कृतिक उद्धार का बीड़ा उठाया। स्वामी जी ने जो स्वराज्य का पहला सन्देश हमें दिया उसकी रक्षा हमें करनी है। उनके उपदेश सूर्य के समान प्रभावशाली हैं। - सर्वपल्ली डॉ० राधाकृष्णन
11. गांधी राष्ट्रपिता हैं तो दयानन्द राष्ट्रपितामह हैं। - प्रथम लोकसभा अध्यक्ष, डॉ० श्री अनन्तशयनम् आयंगर
12. मेरा सादर प्रणाम हो उस महान् गुरु दयानन्द को जिन्होंने भारत वर्ष को अविद्या, आलस्य और प्राचीन ऐतिहासिक तत्त्व के अज्ञान से मुक्तकर सत्य और पवित्रता की जागृति में ला खड़ा किया, उसे मेरा बारम्बार प्रणाम। - रविन्द्र नाथ टैगोर

हमारे अन्य प्रेरक कॉमिक्स



प्रकाशक-वितरक

आर्य साहित्य प्रचार ट्रस्ट

427, गली मन्दिर वाली, नया बांस, दिल्ली-110006
फोन-011-43781191

प्राप्ति स्थान

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

15, हनुमान रोड़, नई दिल्ली-1 फोन न. 011-23360150/23365959
email:aryasabha@yahoo.com website:delhisabha.com

प्रचारार्थ मूल्य : 25/- मात्र